श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल,
राजस्थान का उद्‌बोधन

राजस्थान एसोसिएशन यू.के. द्वारा आयोजित
लीडर्स ऑफ राजस्थान
विषय पर संवाद

दिनांक 29 अगस्त,, 2020 **समय : 04. 30 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

राजस्थान के प्रवासियों का मैं अभिवादन करता हूँ। इस ऑनलाइन प्लेटफार्म से जुडे सभी प्रवासियों और उनके परिजनों को देश की मरूस्थलीय, भक्ति और शक्ति की इस पावन भूमि से आप सभी को राज्य के प्रथम नागरिक की ओर से सादर नमस्कार।

राजस्थान प्रदेश के राज्यपाल के रूप में मैंने 9 सितम्बर, 2019 को कार्यभार ग्रहण किया। मुझे यहां एक वर्ष पूरा होने जा रहा है।

राजस्थान राज्य से, यहां के लोगों से, यहां की गतिविधियों से पहले से ही, मैं परिचित हूँ। अब राज्यपाल जैसे संवैधानिक पद पर मुझे यहां कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अपने कत्तव्यों का मुझे अच्छी तरह से ज्ञान है। मर्यादाओं में रह कर मैं राज्य हित में, लोगों के लिए और उच्च शिक्षा की उन्नति के लिए कार्य कर रहा हूँ।

यहां के लोगों के दुःख–दर्द में शरीक होने के लिए मैं सदैव तैयार रहता हूँ। जब मुझे पता चला कि कोटा संभाग के क्षेत्र जल भराव से प्रभावित हैं, तो मैंने एरियल सर्वेक्षण किया। बचाव एवं राहत कार्यों का जायजा लिया। इसमें कोई दो राय नही है कि राज्य सरकार तो अपने दायित्वों का निर्वहन कर ही रही थी, लेकिन मेरी भी जिम्मेदारी बनती है, इसलिए मैंने तत्समय बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया। राजभवन में राज्यपाल राहत कोष है। मैंने इस कोष की जानकारी ली और उसमें से पचास लाख रूपये की राशि जल भराव क्षेत्रों के लिए प्रदान की।

राज्यपाल राहत कोष उन लोगों की मदद करने में सक्षम है, जिनकों कहीं से सहायता नही मिल पाती है। राज्यपाल राहत कोष के उद्देश्यों को विस्तारित किया गया है। इससे लोगों की मदद करने का दायरा बढ़ गया है।

इस कोष का दायरा बढाकर अब अकाल, बाढ, दुर्घटना, प्राकृतिक आपदाओं में लोगों की सहायता के लिए कर दिया गया है। साथ ही महामारी में औषधि व उपकरण हेतु सहायता, गंभीर रोगी को उपचार हेतु एक मुश्त सहायता, भूतपूर्व सैनिकों के आश्रितों को गंभीर बीमारी में सहायता, विपदा ग्रस्त स्थितियों में असहाय बालक–बालिकाओं की चिकित्सा, भोजन व रख–रखाव में सहायता और किसानों को आपदा काल यथा सूखा, अतिवृष्टि और ट्टिड्डियों के द्वारा फसल नुकसान में सहायता के लिए प्रस्तावित किया गया है।

कोष में लोग स्वेच्छा से राशि दान करने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। कोष का उपयोग किया जा रहा है। आप लोगों की यह मातृ भूमि है। आप सभी समर्थ है। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि आप लोग अपनी इस मातृ भूमि के लिए यदि कुछ मदद करना चाहे तो अवश्य करें।

राज्य की राजनीति, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों का परिदृश्य भी नये स्वरूप में लोगों के सामने आ रहा है। लॉक डाउन जैसी स्थिति भी कदाचित वर्षो में पहली बार ही बनी है। आज की पीढी अपनी भावी पीढियों को कोविड 19 की लडाई की कहानी सुनाया करेगी। वर्तमान समाज के सामने भी यह लडाई नई है। यह ऐसी लडाई है, जिसकी न कोई दवाई है और न ही इलाज का कोई सटीक उपाय। यह लडाई अदभुत है। इसके बचाव के प्रयास ही इलाज के उपाय हैं। लडने वालों को भी शत्रु की शत्रुता दिखाई नही देती है और जब शत्रु के रंग दिखाई देने लगते हैं, तब तक देर हो चुकी होती है। ऐसी स्थिति से प्रदेशवासियों को बचाने के लिए प्रतिदिन बचाव की अपील के साथ लोगों को जागरूक करने के लिए मैं राज्य के प्रथम नागरिक का दायित्व जिम्मेदारी से लगातार निभा रहा हूँ। कोरोना सभी के लिए खतरनाक है। प्रदेश की जनता को हर हाल में सुरक्षित रखना है।

राज्य में कोरोना को हराने के लिए चिकित्सकों ने प्रभावी कदम उठाये हैं। राज्य में जागरूता के निरन्तर प्रयास किये जा रहे है। कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोकने के उपाय तथा शटडाउन के दौरान घरों में रह रहे लोगों विशेषतः निर्धन एवं वंचित वर्गो के रोजमर्रा की आवश्यकताओं की पूर्ति में राज्यस्तरीय रेडक्रॉस एवं जिला इकाइयों अपने सदस्य नेटवर्क द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है।

कोविड–19 के दौरान लोगों को जागरूक करने के लिए मैंने राज्य सरकार से समन्वय रखते हुए प्रयास किये। हर स्तर पर जरूरतमदों की मदद की। प्रत्येक दिन कोविड–19 से बचाव के लिए प्रदेश में किये जा रहे प्रयासों की समीक्षा की। कोविड में लॉक डाउन के दौरान मैंने प्रत्येक दिन लोगों में जागरूकता लाने, लोगों की मदद करने और कोविड से बचाव के लिए किये जा रहे प्रयासों की हर स्तर पर समीक्षा की।

राज्य के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत से प्रतिदिन इस सम्बंध में चर्चा की। मंत्रीमण्डल के सदस्यगण, सांसदगण और सभी विधायकगण से दूरभाष पर बात की। प्रत्येक जिले के कलक्टर और प्रशासन का हौसला बढानें के लिए उनसे भी दूरभाष पर बात की। हर स्तर पर मदद के प्रयास कराये गये। लोगों को जागरूक किया। कोविड में लोगों की मदद के लिए लगे हुए चिकित्सा व सफाईकर्मियों का उत्साह वर्धन भी किया।

यहां के राज्य विश्वविद्यालयों का मैं कुलाधिपति भी हूँ। राज्य विश्वविद्यालयों को स्मार्ट बनाने के लिए कुलपतियों को मैंने निर्देश दिये है। राज्य विश्वविद्यालयों में दीक्षांत समारोहों का समय पर आयोजन किया गया है। प्रत्येक विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में मैं शामिल हुआ हूँ।

गत 26 नवम्बर को पूरे देश में 70 वां संविधान दिवस मनाया गया। आपको बताना चाहता हूँ कि संविधान हमारा मार्गदर्शक है। हमारा मूल ग्रन्थ है।

संविधान की प्रस्तावना में राष्ट्र की मूल भावना का उल्लेख है। संविधान ने हमें मौलिक अधिकार दिये हैं। संविधान के अनुच्छेद 51 क में हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्त्तव्यों को परिभाषित किया गया है। मौलिक अधिकार और कर्त्तव्य, यह दोनों ही संविधान के प्रमुख स्तम्भ हैं। मौलिक अधिकारों की तो हम बात करते हैं, लेकिन आवश्यकता है कि हम हमारे कर्त्तव्यों को जानें, समझें और उनके अनुरूप ही अपना कार्य और व्यवहार करें।

आमजन को संविधान की जानकारी होना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता व सामाजिक समस्सता के लिए कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा। मैं चाहता हूं कि विश्वविद्यालायों में युवाओं को मूल कर्त्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए अभियान चलाया जाये। दीक्षांत समारोह में मैं उपस्थित युवा वर्ग को संविधान की प्रस्तावना और कर्त्तव्यों का वाचन करवा रहा हूँ ताकि छात्र–छात्राओं को संविधान में निहित कत्तत्यों का ज्ञान हो सके।

सभी विश्वविद्यालयों में संविधान उद्यान बनाये जा रहे है। राजभवन में भी विश्वविद्यालय उद्यान विकसित किया जा रहा है। राज्य में कदाचित देश के लिए यह एक मिशाल है। इसमें पूरे राज्य की प्रतिकृति राज भवन में दिखाई देगी।

युवाओं के भविष्य का पूरा ध्यान रख रहा हूँ। इसलिए कोविड काल के विपरित परिस्थितियों में भी मैंने विश्वविद्यालयों का दीक्षांत समारोह आयोजित करने की पहल की है। इससे युवा पीढ़ी को समय पर उपाधि मिल रही हैं। युवाओं में उत्साह भी आ रहा है। युवाओं को आगे की पढ़ाई में भी किसी तरह का व्यवधान नही होगा बल्कि समय रहते हुए वह आगे की पढ़ाई के लिए जहां कही भी प्रवेश लेना चाहे, उन्हें प्रवेश मिल जायेगा। इसमें उपाधि न मिलने की बाध्यता आड़े नही आयेगी।

हमारा देश राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे महापुरूषों की जन्म भूमि और कर्मभूमि है।

इनके सिद्वांत और आदर्श हमारे प्रेरणास्रोत है। हम राष्ट्रपिता द्वारा बताए गए मार्ग पर चलें और आने वाली पीढ़ी को भी इससे परिचित करायें। इसका छोटा सा प्रयास मैंने राजभवन में गांधीजी की 150वीं जयंती के अवसर पर स्वच्छता अभियान, 150 पौधों का रोपण और गांधी जी की प्रतिमा लगाकर किया। इसमें आम नागरिक और स्कूल के बच्चे शामिल हुए। अपने महापुरूषों की धरोहर को, उनके विचारों को, भावी पीढी तक पहुंचाने में ही हमारी सफलता निहित होती है।

यहां की सांस्कृतिक विविधता ने मेरे मन में अमिट छाप छोडी है। राजस्थान का प्राकृतिक सौंदर्य, कला और संस्कृति यहां आने वाले हर व्यक्ति को आत्म विभोर कर देता है। इसके आकर्षण से मैं भी अछूता नही रहा। बांसवाडा के दूरवर्ती आदिवासी गांवों में मैं, गया। ग्रामीणों से बात की। राजस्थान में प्रतिभा हर जगह है।

आवश्यकता है इस प्रतिभा को एक दिशा प्रदान करने की। यहां की उन्नति में अपना भी कुछ योगदान अर्पित कर सकूं, यही मेरा प्रयास है।

मैंने सीमावर्ती जिला जैसलमेर का दौरा किया। सैनिकों के साथ बैठा। बात की। उनके हाल चाल जाने। उनके साथ चाय नाश्ता किया। उनका हौसला बढ़ाया।

आप सभी राजस्थान के मूल निवासी हैं। यहां आपकी जड़ें है। आप अपनी मातृ भूमि के विकास में योगदान करें। हमें मिलकर इस प्रदेश के लिए बहुत कुछ करना है। मेरी प्राथमिकता है कि प्रदेश का चहुंमखी विकास हो। इसके लिए हमें दिव्यांगों, बालिकाओं और महिलाओं को विकास की मुख्य धारा से जोड़ना है। दिव्यांगों की हर संभव मदद के प्रयास करने हैं। उनको आगे बढ़ाने के अवसर देने होंगे।

बालिकाओं की शिक्षा के लिए विशेष प्रयास करने होंगे। गांव, शहर जहां भी ऐसी बालिकाएं जो विद्यालय नहीं जा पा रही हैं। उन्हें शिक्षा से जोड़ना है।

नवजात शिशु और माताओं के स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना मेरी प्राथमिकताओं में है। इसके लिए बच्चों और महिलाओं की चिकित्सा व उनके स्वस्थ रहने के लिए पोषण उपलब्धता को सुनिश्चित करना होगा। मैं, आप सभी का देश व प्रदेश की सेवा के लिए आहवान करता हूँ।

धन्यवाद। जयहिन्द।

—